भूमिका

आचार्य किशोरीदास वाजपेयी पहले ऐसे वैयाकरण थे, जिन्होंने हिंदी व्याकरण के अंग्रेजी आधार को अस्वीकार कर उसे संस्कृत के आधार पर प्रतिष्ठित किया। संस्कृत का आधार स्वीकार करते हुए वाजपेयी जी ने हिंदी भाषा की मूल प्रकृति की न केवल रक्षा कि बल्कि उसका वैज्ञानिक आधार दृढ़ता से प्रतिपादित भी किया। वाजपेयी जी ने हिंदी की प्रकृति को पहचाना और उसकी गति से भी पूर्ण परिचय प्राप्त किया और तब अपने मौलिक मनन एवं चिंतन से हिंदी को वास्तविक व्याकरण दिया, जिसे 'हिंदी शब्दानुशासन' के नाम से जाना जाता है।

हिंदी की व्याकरण प्रणाली में वाजपेयी जी का बृहद और मौलिक शोध-ग्रंथ 'हिंदी शब्दानुशासन' सभी व्याकरणों से भिन्न है। वाजपेयी जी का व्याकरणिक चिंतन विशिष्ट है तथा वह अपने पूर्व अनेक अवधारणाओं से असहमत भी थे। वाजपेयी जी का व्याकरण, हिंदी व्याकरण के क्षेत्र में मौलिक अंतर्दृष्टियाँ प्रस्तुत करता है और उन्होंने कई नयी अवधारणाएँ भी दी; जैसे – 'पूरक' का खंडन करके उसे 'विधेय विशेषण' बतलाया, 'आ' विभक्ति को 'पुं-प्रत्यय' कहा, का, के, की - रा, रे, री – न, ने, नी को संबंध प्रत्यय कहा तथा के, रे, ने को संबंध विभक्तियाँ इत्यादि अनेक व्याकरणिक बिंदुओं को स्पष्ट किया है। इनकी 'सिद्ध' और 'साध्य' क्रियाओं की अवधारणा नई तथा मौलिक है। अतः इनका व्याकरणिक चिंतन मौलिक तथा हिंदी के मानक व्याकरण के रूप में माना जा सकता है। उनके परवर्ती अधिकांश वैयाकरण प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से अपने व्याकरण लेखन में 'हिंदी शब्दानुशासन' को आधार बनाते हैं। वाजपेयी जी की अवधारणाओं से कुछ वैयाकरण सहमत भी हुए परंतु अधिकांश वैयाकरणों ने उनसे अलग अपने मत भी स्थापित किए।

प्रस्तुत शोधकार्य 'आचार्य किशोरीदास वाजपेयी का व्याकरणिक चिंतन एवं परवर्ती हिंदी व्याकरण' का उद्देश्य आचार्य किशोरीदास वाजपेयी के व्याकरणिक चिंतन का अध्ययन कर उनके मौलिक स्थापनाओं तथा मुख्य हिंदी के परवर्ती व्याकरणों का तुलनात्मक अध्ययन कर इनके बीच मूलभूत अंतर तथा सहमति-असहमति का वर्णन करना है। प्रस्तुत शोध-कार्य में गुणात्मक तथा मात्रात्मक प्रविधि का प्रयोग किया गया है, जिसके अंतर्गत तुलनात्मक, वर्णनात्मक तथा विश्लेषणात्मक पद्धति का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत शोधकार्य को कुल पाँच अध्यायों में विभक्त किया गया है। जिसके अंतर्गत प्रथम अध्याय 'हिंदी व्याकरण और उसका संक्षिप्त इतिहास' में

व्याकरण से संबंधित चर्चा की गयी है, जिसमें व्याकरण से संबंधित परिभाषाएँ, विशेषताएँ इत्यादि के साथ हिंदी व्याकरण के इतिहास का संक्षेप में वर्णन किया गया है।

इसके पश्चात् मुख्य शोधकार्य को अन्य 4 अध्याय में विभक्त किया गया है। द्वितीय अध्याय 'आचार्य किशोरीदास वाजपेयी और उनका व्याकरणिक चिंतन' के अंतर्गत वाजपेयी जी के व्याकरणिक चिंतन तथा मौलिक स्थापनाओं का वर्णन किया गया है। तृतीय अध्याय 'हिंदी शब्दानुशासन : एक विशिष्ट कृति' के अंतर्गत हिंदी भाषा की प्रकृति, बोलियों, विशेषताओं के साथ संस्कृत, प्राकृत और हिंदी के परस्पर संबंध का भी वर्णन किया गया है। इसके अतिरिक्त हिंदी भाषा में प्रयोग होने वाले व्याकरणिक घटक - संज्ञा, विशेषण, विभक्ति, कारक, अव्यय, संधि, समास तथा क्रिया आदि का सोदाहरण वर्णन किया गया है। चतुर्थ अध्याय 'हिंदी शब्दानुशासन के पश्चात् व्याकरण' के अंतर्गत 'हिंदी शब्दानुशासन' के पश्चात् लिखित व्याकरणों में आर्येंद्र शर्मा की 'A Basic Grammar Of Modern Hindi', ज़ाल्मन दीमशित्स लिखित 'हिंदी व्याकरण', सूरजभान सिंह लिखित 'हिंदी का वाक्यात्मक व्याकरण' तथा रमाकांत अग्निहोत्री की 'हिंदी : एक मौलिक व्याकरण' के व्याकरणिक चिंतन को दर्शाया गया है। शोधकार्य का मुख्य चतुर्थ अध्याय तथा शोध-प्रबंध का अंतिम पंचम अध्याय 'हिंदी शब्दानुशासन एवं परवर्ती व्याकरण : तुलनात्मक अध्ययन' के अंतर्गत आचार्य किशोरीदास वाजपेयी के व्याकरणिक चिंतन तथा परवर्ती व्याकरण का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।